छोटे कदम, बड़ी सफलता

डॉ. मुकेश नायक

सिमिटि-सिमिटि जल भरहिं तलावा. जिमि सदगुन सज्जन पहिं आवा ॥

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरितमानस की यह चौपाई जीवन का अत्यंत गहरा और प्रेरणादायक संदेश देती है. जिस प्रकार वर्षा की बूंदें धीरे-धीरे एक तालाब को भर देती हैं, उसी प्रकार छोटे-छोटे प्रयास, अच्छे विचार, अनुशासन, सद्गुण और निरंतर परिश्रम मिलकर व्यक्ति के जीवन को सफलता और सम्मान से भर देते हैं.

एक बूंद देखने में बहुत छोटी होती है. उसके गिरने से तालाब के जलस्तर में कोई बड़ा परिवर्तन दिखाई नहीं देता, लेकिन जब हजारों बूंदें लगातार गिरती रहती हैं तो वही तालाब भर जाता है. जीवन भी इसी सिद्धांत पर चलता है. हमारा कोई छोटा प्रयास तत्काल बड़ा परिणाम न दे, फिर भी लगातार किए गए छोटे प्रयास एक दिन असाधारण उपलब्धि का आधार बन जाते हैं. इसलिए छोटी शुरुआत को कभी कम नहीं आंकना चाहिए. आज की तेज रफ्तार जिंदगी में हर व्यक्ति शीघ्र सफलता प्राप्त करना चाहता है. लोग कम समय में प्रतिष्ठा, धन और सम्मान हासिल करने की आकांक्षा रखते हैं. लेकिन स्थायी सफलता कभी अचानक नहीं मिलती. उसके पीछे धैर्य, निरंतरता, अनुशासन और वर्षों का परिश्रम होता है. कोई विद्यार्थी एक दिन पढ़कर विद्वान नहीं बनता, कोई खिलाड़ी एक दिन अभ्यास करके महान नहीं बनता और कोई व्यक्ति एक दिन की मेहनत से जीवन में सार्थक उपलब्धि हासिल नहीं कर सकता. हर बड़ी उपलब्धि की नींव छोटे और निरंतर प्रयासों पर टिकी होती है. जो विद्यार्थी प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा अध्ययन करता है, उसके ज्ञान का भंडार धीरे-धीरे बढ़ता जाता है. जो व्यक्ति हर दिन कुछ नया सीखता है, उसका अनुभव समय के साथ उसकी सबसे बड़ी पूंजी बन जाता है. इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति एक-एक करके अपनी बुरी आदतों को छोड़ने और अच्छी आदतों को अपनाने का प्रयास करे तो धीरे-धीरे उसका व्यक्तित्व पूरी तरह बदल सकता है.

हम अक्सर सफल लोगों को देखकर उनकी उपलब्धियों की प्रशंसा करते हैं, लेकिन उन उपलब्धियों के पीछे छिपे वर्षों के संघर्ष को नहीं देख पाते. हमें उनका आत्मविश्वास दिखाई देता है, उन असफलताओं का इतिहास नहीं, जिन्होंने उनके आत्मविश्वास को मजबूत बनाया. उनकी सफलता दिखाई देती है, लेकिन उसके पीछे किए गए त्याग, निराशा, कठिन परिश्रम और असंख्य प्रयास अक्सर दिखाई नहीं देते. वास्तविकता यह है कि हर बड़ी सफलता अनगिनत छोटे प्रयासों से निर्मित होती है. तुलसीदास जी की चौपाई केवल सफलता की बात नहीं करती, बल्कि सद्गुणों के महत्व को भी रेखांकित करती है. व्यक्ति की वास्तविक पहचान केवल उसके धन, पद या प्रसिद्धि से नहीं होती. उसका चरित्र और व्यवहार ही उसे समाज में वास्तविक सम्मान दिलाते हैं. ईमानदारी, दूसरों के प्रति सम्मान, जरूरतमंदों के प्रति करुणा, माता-पिता और गुरुजनों के प्रति श्रद्धा, कठिन परिस्थितियों में धैर्य, विनम्रता और निष्ठा ऐसे गुण हैं, जो व्यक्ति को वास्तव में श्रेष्ठ बनाते हैं. सद्गुण भी धीरे-धीरे ही जीवन का हिस्सा बनते हैं. जिस प्रकार बूंद-बूंद पानी एकत्र होकर तालाब भरता है, उसी प्रकार छोटे-छोटे अच्छे कार्य और सकारात्मक आदतें व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करती हैं. आज किया गया कोई अच्छा कार्य, कल अपनाई गई कोई अच्छी आदत या किसी जरूरतमंद के प्रति दिखाई गई थोड़ी-सी संवेदना भी हमारे व्यक्तित्व को मजबूत बनाती है. समय के साथ यही छोटी-छोटी अच्छाइयां एक सुदृढ़ और उदात्त चरित्र का निर्माण करती हैं.

जीवन में कठिनाइयां और असफलताएं भी आती हैं. कई बार हम पूरी मेहनत करते हैं, लेकिन अपेक्षित परिणाम तुरंत नहीं मिलता. ऐसे समय में निराश होने के बजाय धैर्य बनाए रखना चाहिए. तालाब एक बूंद से नहीं भरता, बल्कि पानी की निरंतर धारा से भरता है. उसी प्रकार निरंतर प्रयास करने वाले व्यक्ति को अंततः सफलता मिलती है. असफलता को भी सीखने का अवसर समझना चाहिए. हर गलती हमें कुछ सिखाती है और हर चुनौती हमें पहले से अधिक मजबूत बनाती है. जो व्यक्ति असफलताओं के बावजूद प्रयास करना नहीं छोड़ता, उसके सफल होने की संभावना सबसे अधिक होती है. रास्ते की कठिनाइयां हमें अपनी मंजिल छोड़ने के लिए नहीं, बल्कि और अधिक दृढ़ता के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं.

हमें अपनी तुलना लगातार दूसरों से भी नहीं करनी चाहिए. प्रत्येक व्यक्ति की जीवन-यात्रा अलग होती है. कुछ लोग जल्दी सफलता प्राप्त कर लेते हैं, जबकि कुछ को अधिक समय लगता है. महत्वपूर्ण यह नहीं कि हम दूसरों से कितने आगे हैं, बल्कि यह है कि हम कल की तुलना में आज कितने बेहतर बने हैं. यदि हम प्रतिदिन थोड़ा-सा भी सुधार कर रहे हैं, तो निश्चित रूप से आगे बढ़ रहे हैं. यह सिद्धांत शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय, खेल और व्यक्तिगत विकास—जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू होता है. लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हमेशा कोई बड़ी छलांग लगाना आवश्यक नहीं है. कई बार प्रतिदिन उठाया गया एक छोटा कदम ही हमें मंजिल के करीब ले जाता है. सफलता के लिए सबसे जरूरी है कि कदम छोटा हो सकता है, लेकिन प्रयास निरंतर होना चाहिए. हमें यह भी याद रखना चाहिए कि कोई भी ईमानदार प्रयास व्यर्थ नहीं जाता. आज की मेहनत कल का अनुभव बनती है और वही अनुभव भविष्य की सफलता की नींव रखता है. इसलिए समय का सदुपयोग करना चाहिए, अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए, योग्य और प्रेरणादायक लोगों से सीखना चाहिए तथा निरंतर अपने चरित्र और व्यक्तित्व को मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिए.

> अंतत: तुलसीदास जी की यह चौपाई हमें यही संदेश देती है कि महान उपलब्धियां छोटे और निरंतर प्रयासों से निर्मित होती हैं तथा महान व्यक्तित्व सद्गुणों के क्रमिक संचय से बनता है. जिस प्रकार बूंद-बूंद पानी तालाब को भर देता है, उसी प्रकार प्रतिदिन का परिश्रम, अनुशासन, अच्छे विचार और सद्कर्म हमारे जीवन को उपलब्धियों, गरिमा और सम्मान से भर सकते हैं. इसलिए अपने छोटे प्रयासों को कभी महत्वहीन न समझें. आज एक कदम बढ़ाएं, कल दूसरा कदम बढ़ाएं और निरंतर आगे बढ़ते रहें. परिणाम तुरंत दिखाई न दे, फिर भी प्रयास जारी रखें. एक बूंद छोटी जरूर होती है, लेकिन निरंतर गिरती रहे तो तालाब भर देती है. इसी प्रकार हमारे छोटे और सतत प्रयास एक दिन बड़ी सफलता में बदल सकते हैं. हमें निराशा के सामने झुकने के बजाय अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहना चाहिए, अच्छे गुणों को जीवन में उतारना चाहिए और विश्वास रखना चाहिए कि निरंतर प्रयास का फल एक दिन अवश्य मिलता है.

क्लास by बड़े भाई

सही समय पहचानिए

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, आपके यहाँ खेती होती है? नही होती होगी तो भी हम खेती के विषय में इतना तो जानेंगे ही, जो मैं आपसे कहने जा रहा हूँ.. किसान हर फसल के लिए सही समय देखता है वो कोई भी फसल कभी भी नही बो देता.. अगर वो ऐसा करता है तो उसको कई बार लम्बा घटा उठाना पड़ता है.. तो इसलिए सफलता के बड़ा महत्वपूर्ण है सही समय पहचानना.. वरना सब सही होने पर भी आप सफलता से चूक सकते हैं..

इसे आपको एक और उदहारण से समझाता हूँ..

किसी ऑफिस में दो क्लर्क थे, उनको अपने ऊपर के अधिकारी से रोज़ कुछ पेपर में हस्ताक्षर चाहिए होते थे लेकिन उनके अधिकारी थोड़े कड़े मिजाज़ के थे.. वो इतना जल्दी किसी पेपर पर हस्ताक्षर नही करते थे.. फिर भी उन दोंनो क्लर्कों में से एक का पेपर कभी नही रुकता था.. और दूसरा कई दिनों तक परेशान रहता था.. अब जानिए वो पहला क्लर्क क्या करता था.. वो पहला क्लर्क सही समय पहचान गया था.. लंच के ठीक बाद उसका अधिकारी, प्रतिदिन अपने घर में अपनी बेटी और नाती से फोन पर बात करता था.. उसके बाद उसका मूड बिलकुल खुशनुमा हो जाता था और पहला वाला क्लर्क ठीक इसी समय पर अपना पेपर लेकर पहुँचता और वो खुशी खुशी बिना कोई अड़चन लगाये हस्ताक्षर कर देते थे.. आप बात समझ गये होंगे..

तो बस यही कहना था कि किसी भी काम के लिए सही समय पहचानिए..सही समय पहचान करके शुरुआत कीजिए.. निश्चित आप सफल होंगे.. धन्यवाद

लघुकथा

जीविकोपार्जन

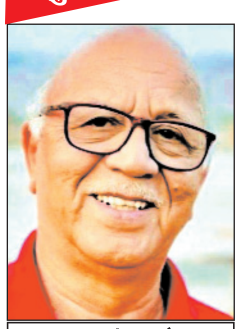

सुभाष चंद्र लखेड़ा

पिछले तीन वर्षों से वह एक बैंक में कार्यरत है. कोई छह महीने पहले उसने कविताएं लिखनी शुरू की. जब उसकी कविताएं कुछ ई-पत्रिकाओं में छपी तो उन्हें देख उसके कुछ चालू मित्र उसकी तुलना उसे झाड़ में चढ़ाने के लिए देश के प्रतिष्ठित कवियों से करने लगे.

बहरहाल, उसे भी भ्रम होने लगा कि उसका जन्म साहित्य सृजन के लिए हुआ है. धीरे धीरे उसे यह बताने में संकोच होने लगा कि वह बैंक में नौकरी करता है. फलस्वरूप, कुछ दिनों से वह अपना परिचय देते समय अक्सर यह कहना नहीं भूलता कि जीविकोपार्जन के लिए वह एक बैंक में नौकरी कर रहा है. एक दिन

उसने जब यह जीविकोपार्जन वाली बात मेरे सामने मेरे मुंहफट मित्र चकोर से कही तो चकोर ने तपाक से कहा, बैंक में अपना काम ध्यान से किया करो. ई- पत्रिकाओं में कविताएं लिखने से पेट नहीं भरता. मैं भी कभी चंद लघुकथाएं लिखने के बाद तुम्हारी तरह नौकरी को एक मजबूरी समझने लगा था लेकिन फिर मुझे अनुभव हुआ कि तीसरे दर्जे के साहित्य सृजन के लिए तो जीविकोपार्जन और भी अधिक जरूरी है.

वनमाली की प्रदर्शनी में विश्वस्तरीय चित्रकृतियों से अफ़ज़ल को किया याद

आयोजन

वनमाली सृजन केंद्रों के छठवें राष्ट्रीय सम्मेलन के पहले दिन प्रख्यात चित्रकार अफ़ज़ल की स्मृति में स्मरण अफजल समारोह आयोजित किया गया. उनकी चित्रकृतियों की प्रदर्शनी का उद्घाटन रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ संतोष चौबे ने किया. प्रदर्शनी में अफ़ज़ल की चुनिंदा उत्कृष्ट कृतियाँ प्रदर्शित की गई. चौबे ने कहा कि अफ़ज़ल भारत के उन चित्रकारों में शुमार हैं जिन्होंने पश्चिमी के प्रभाव को ढोया नहीं, आत्मसात किया, वैश्विक दृष्टि बनाई और अपनी चित्रकृतियों में एक इतिहास रच दिया.

पूरा प्रदेश जब उन्हें देवास के इस साधारण चित्रकार के रूप में देखने और धीरे धीरे भुलाने लगा था, तब रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय और विश्वरंग ने उन्हें नए संदर्भों में पुनः वैश्विक मंच पर स्थापित किया और आधुनिक कला में जो भारतीय कलाकार निरंतर हाशिए पर धकेले जा रहे हैं, उनकी पुनर्प्रतिष्ठा संभव हो सकी. उन पर हिन्दी में एक मोनोग्राफ़ प्रकाशित कर दुनिया के सामने रखा. महावीर वर्मा द्वारा लिखित और रबिंद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय से प्रकाशित अफ़ज़ल के मोनोग्राफ का विमोचन भी हुआ. वरिष्ठ चित्रकार एवं कला समीक्षक अशोक भौमिक ने कहा कि अफ़ज़ल ने कला के आधारभूत तत्वों की वैश्विक कला दृष्टि को अपनाकर भारतीय आधुनिक चित्रकला में एक बड़ी सृजनात्मक लकीर खींच दी. अफजल सिर्फ देवास के नहीं वे भारत के महान चित्रकारों में शुमार है.

कला समीक्षक डॉ राजेश व्यास ने कहा कि अफ़ज़ल जैसे अमूर्तन के चितेरे के चित्रों में वह निहित है. अफजल के चित्रों में दृश्य से अधिक अदृश्य की मौजूदगी होती है. वरिष्ठ कथाकार प्रकाश कान्त ने कहा कि अफ़ज़ल महज एक चित्रकार नहीं थे उन्होंने अपनी कला से तो हमें प्रेरित किया ही बल्कि अपनी सादगी और स्पष्ट जीवन दृष्टि से भी प्रभावित किया. संचालन कथाकार मनीष वैद्य ने किया. स्वागत वक्तव्य कृपाली राणा और अतिथि परिचय मनीष शर्मा ने दिया. देवास शहर के गणमान्य जन, कलाप्रेमी और साहित्यकार बड़ी संख्या में उपस्थित थे.

लघुकथा

प्यार का रंग

कविता अर्गल

वैशाली शादी के बाद पहली होली के लिए मायके आई हुई थी. घर में पकवानों की अलग ही खुशबू आ रही थी. उसने अम्मा और भाभी से कहा- अब बस भी करो कब से बना रहे हो थक जाओगे. बिट्टू तुम्हारी ससुराल के लिए भी रखेंगे त्यौहार में घर का ही बना सब अच्छा लगता है- अम्मां ने कहा.

हां रोहन को भी बहुत पसंद है कहते-कहते वैशाली का चेहरा इस नए-नए प्यार के गुलाबी रंग से रंग गया. उसने महसूस किया कि प्यार के रंग के आगे सब रंग फीके है.

कविताएं

मनुष्य

पवन शर्मा

वह जिसने पत्थरों से
आग निकाली
मिट्टी से घर बनाए
नदियों पर पुल गढ़े
आसमान में उड़ने के सपने बुने

उसकी आँखों में
चमक है खोज की
पर भीतर कहीं
एक रिक्तता भी पलती है

वह पूछता है -
क्या मैं प्रकृति का संतान हूँ
या उसका शत्रु बन बैठा हूँ?

वह जितना बाहर दौड़ता है
उतना भीतर अकेला हो जाता है
सभ्यता की रोशनी
कभी मार्गदर्शक बनती है
कभी अंधा कर देती है
मनुष्य का मन
वृक्ष-सा स्थिर होना चाहता है
नदी-सा बहना चाहता है
और बीज-सा नया जन्म लेना चाहता है

रास्ते

सुचिता सकुनिया

कितने अजीब होते हैं न ये रास्ते
वो भी जिन्हें हम चुनते हैं,
और वो भी जिन्हें जिदंगी हमारे लिए चुनती है.
कभी रास्ते सही होते हैं,
पर मंजिल गलत होती है,
तो कभी गलत रास्ते भी
हमें सही मंजिल तक ले जाते हैं.
पर कुछ रास्तों पर
हमें अकेले ही चलना चाहिए,
क्योंकि कुछ सफर
हमें खुद से मिलाने के लिए होते हैं.

और शायद कुछ तन्हा सफर
हमें खुद की जिम्मेदारी लेना सिखा देते हैं,
क्योंकि हर सहारा ताकत नहीं होता,
कुछ सहारे हमें कमजोर भी बना देते हैं.
रास्ते, सफर, हमसफर
ये सब तो फलसफा है,
असल में यात्रा तो अपनी है.
इसलिए रास्ते भी
हमें खुद ही तय करने चाहिए—
अपने लिए,
दुनिया के लिए नहीं.

कहानी

खिलखिला उठा बचपन

डॉ प्रेमलता यदु

मुझे लगता है डिंपी का स्कूल हमें फिर से बदलना होगा. प्रिंसिपल मैडम का फोन था. अपने बेडरूम की गैलरी में गुनगुनी धूप सेंकते हुए, करीब एक-डेढ़ घंटे से अपने मोबाइल पर सिर झुकाए बैठें नवीन के सामने चाय का कप रखते हुए समृद्धि बोली.

नवीन मोबाइल में कुछ इस तरह से खोया हुआ था कि उसने समृद्धि की ओर देखे बगैर और उसकी पूरी बात सुने बिना ही जवाब में हूं..... कह कर मोबाइल में ही व्यस्त रहा. नवीन को इस तरह मोबाइल में डूबा देखकर समृद्धि ने भी दोबारा उससे फिर कुछ नहीं कहा और स्वयं भी अपना चाय का कप लेकर और लेपटॉप खोल कर वही रूम में बैठ गई. तभी गृह सहायिका चम्पा वहां आ गई और बोली- दीदी नाश्ता क्या बनाऊं

लेपटॉप पर नजर गड़ाए समृद्धि बोली- ब्रेड सैंडविच बना लो और खाने में दीदी- चम्पा ने दोबारा पूछा. लेपटॉप पर अपनी उंगलियां चला रही समृद्धि क्षण भर के लिए अपनी आंखों और उंगलियों को विराम देते हुए बोली -

डिंपी तो कोई भी हरी सब्जियां ढंग से खाती ही नहीं है, तुम जो भी हरी सब्जियां बनाओगी कलेश होना ही है और आज तो मेरे पास बिल्कुल भी मान-मनुहार के लिए समय नहीं है, तुम एक काम करो मटर पुलाव, रायता और आलू के पराठें बना लो.

जी दीदी इतना कह कर चंपा जाने लगी तो समृद्धि ने उसे रोकते हुए कहा - देखो चंपा आज मैं ऑफिस का बहुत ही जरूरी काम कर रही हूं, मुझे कोई डिस्टर्बेंस नहीं चाहिए, तुम मेरा ब्रेकफास्ट और खाना दोनों समय पर यहीं रूम में दे जाना, सारा काम देख लेना, डिंपी को भी खाना खिला देना और हां डिनर में कुछ स्पेशल बना लेना मेरी फ्रेंड आने वाली हैं जी ठीक है दीदी इतना कह कर चंपा चली गई. आज रविवार को भी समृद्धि अपने ऑफिस का काम घर ले आई थी. जिसे वह पूरे दिन अपने रूम पर बैठ कर ही करने वाली थी. यह कोई नई बात नहीं थी, समृद्धि अक्सर ऐसा ही करती, वह ऑफिस का पेंडिंग काम घर ले आती, असल में समृद्धि एम.एन.सी में प्रोजेक्ट मैनेजर थी और वह छुट्टी वाले दिन भी ज्यादातर ऑफिस के ही काम में व्यस्त रहती. पति नवीन का भी यही हाल था. वह भी ऑफिस, दोस्त या फिर अलग-अलग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर ही अपना ज्यादा समय व्यतीत करता. दोनों ही पति-पत्नी का ज्यादातर समय अपने ऑफिस, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म या फिर किसी ना किसी दूसरे काम में ही बीतते.

उनकी बेटी डिंपी का ख्याल चंपा ही रखती. तीन साल की डिंपी का व्यवहार आम बच्चों से थोड़ा अलग था. वह बहुत ही शांत और कम बोलने वाली बच्ची थी. डिंपी के कम बोलने का संभवत: एक कारण यह भी था कि वह शब्दों का स्पष्ट रूप से उच्चारण अपने हमउम्र बच्चों की तरह नहीं कर पाती थी. इस वजह से कई बार कुछ शरारती बच्चे उसका मजाक भी बनाया करते थे. महानगर में रहने वाले इस एकल परिवार का माहौल कुछ ऐसा था कि दोनों पति-पत्नी हर वक्त काम में कुछ इस तरह से व्यस्त रहते कि वे कई बार अपने माता-पिता होने का दायित्व भी भूल जाते और डिंपी की सारी जिम्मेदारी चंपा के हाथों में सौंप कर वे डिंपी के प्रति बेपरवाह हो जाते.

वैसे तो चंपा पूरा ख्याल रखती डिंपी का किन्तु उसके पास भी घर के इतने ज्यादा काम होते कि वह भी डिंपी को पर्याप्त समय नहीं दे पाती. जिसका नतीजा यह हुआ कि डिंपी का स्क्रीन टाइम बहुत अधिक बढ़ गया. स्कूल से आने के बाद डिंपी सारा वक्त मोबाइल और टीवी पर ही बिताती. डिंपी का एक और व्यवहार ऐसा था जो सभी के लिए चिंता का विषय बना हुआ था. डिंपी जरा सी बात पर उग्र हो जाती, मन मुताबिक काम ना होने पर अपना संतुलन खो बैठती और गुस्से में स्वयं को या फिर दूसरों को

चोट पहुंचाने लगती. इस वजह से पिछले दो वर्षों में डिंपी का चार बार स्कूल बदलना पड़ गया था क्योंकि स्कूल प्रशासन डिंपी के उग्र व्यवहार की वजह से उसे अपने स्कूल में रखने को तैयार नहीं था. आज सुबह से ही नवीन मोबाइल पर व्यस्त रहा फिर अपने दोस्तों से मिलने चला गया, समृद्धि ऑफिस के काम में और चंपा घर के काम के साथ दोपहर के खाने तथा रात के खाने पर आने वाले मेहमान के आवभगत की तैयारी में व्यस्त रही. इस तरह सभी अपने-अपने काम में व्यस्त रहे. डिंपी सुबह से टीवी के सामने बैठी रही और वहां से हिली भी नहीं. चंपा ने बड़ी मुश्किल से डिंपी को नाश्ता और दोपहर का खाना खिलाया. इस तरह पूरा दिन बीत गया, शाम ने अलविदा कहा और रात के दस्तक के साथ दरवाजे पर भी दस्तक हुई.

समृद्धि की सहेली छवि का आगमन हुआ, दोनों सहेलियां स्कूल के बाद अब मिल रही थी, काफी देर तक बातें चलती रही इस बीच नवीन भी घर लौट आया फिर खाने की टेबल पर जब सभी साथ बैठे तब नवीन ने डिंपी को डायनिंग टेबल पर बैठने को कहा लेकिन वह टीवी के सामने से उठी ही नहीं. यह देख नवीन को थोड़ी शर्मींदगी महसूस हुई, जिसे समृद्धि ने भांप लिया और टीवी बंद कर दिया फिर डिंपी को डायनिंग टेबल पर बैठने को कहा. समृद्धि के ऐसा करते ही डिंपी अपना आपा खो बैठी और सामने रखा वॉश उठा कर जमीन में तोड़ दिया, चीखने चिल्लाने लगी यह देखकर सब सन्न रह गए. डिंपी को इस तरह उग्र होता देख छवि ने तुरंत टीवी ऑन कर दिया और वह डिंपी से बातें करने लगी, थोड़ी ही देर में डिंपी सामान्य हो गई और वह छवि से कुछ ऐसे घुल-मिल गई जैसे वह छवि को बहुत अच्छी तरह से जानती हो, इतना ही नहीं छवि के कहने पर उसने खाना भी बड़े आराम से खा लिया. यह देख कर समृद्धि, नवीन और चंपा को बड़ी हैरानी हुई. समृद्धि ने बड़े आश्चर्य से छवि से पूछा-

तुमने यह किया कैसे

समृद्धि के इस प्रश्न का छवि ने कोई उत्तर नहीं दिया बल्कि बड़ी संजीदा होते हुए उसने समृद्धि से प्रश्न किया कि - तुम सब का डेली रूटीन क्या है और माता-पिता होने के नाते तुम दोनों डिंपी को कितना समय देते हो...? छवि के प्रश्नों का उत्तर देते हुए समृद्धि ने अपने और नीवन के ज्यादातर समय व्यस्त रहने और डिंपी को पर्याप्त समय ना दे पाने की बात कही, यह सुनकर छवि गंभीर होते हुए बोली - तुम दोनों का अपने काम पर ध्यान देना लाजमी है किन्तु इस वजह से डिंपी के प्रति बेपरवाह होना सही नहीं है. मैं एक चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट हूं. डिंपी का व्यवहार देखकर ही समझ गई कि उसमें एग्रेसिव नेस है ,उसे थैरेपी की जरूरत है, उसे तुम दोनों के प्यार, साथ और सहयोग की जरूरत है. डिंपी ठीक से बोल नहीं पाती क्योंकि उसके साथ कोई बातें करने वाला ही नहीं है, वह सारा दिन चुपचाप अकेले बैठ कर केवल टीवी ही देखती है कुछ बोलती नहीं है तो कहां से सही तरह से बोलना सीख पाएगी और इसी वजह से उसका कोई दोस्त भी नहीं है. उसे दोस्त और अभिभावक दोनों की जरूरत है. छवि की बातों की गहराई को समझने के पश्चात् समृद्धि और नवीन ने यह निश्चय किया वे अपने काम, सोशल मीडिया व स्क्रीन टाइम का समय निर्धारित कर लेंगे ताकि वे डिंपी को पर्याप्त समय दे सके. साथ ही छवि की सलाह पर उन्होंने डिंपी की थैरेपी शुरू करवा दी. थैरेपी शुरू होने के छह महीने के भीतर ही डिंपी के व्यवहार में आश्चर्यजनक रूप से बदलाव आने लगा, उसकी शब्दों में स्पष्टता आने लगी.

समृद्धि और नवीन उसके साथ समय बिताने लगे तो स्क्रीन से डिंपी की दूरी भी बढ़ गई और वह बाकी बच्चों के संग घुलने मिलने व खेलने लगी. डिंपी सामान्य होने लगी थी, उसका मुरझाया बचपन खिलखिलाने लगा. समृद्धि और नवीन भी स्क्रीन से थोड़ी दूर और डिंपी के बहुत करीब आ गए थे.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी